



नागसिद्धा मेः दुर्निःकुञ्जिसिद्धनरः कृत्वा नावीकुनीः सयनसव
निवृत्तिभोगाय विवृत्तः सुखगतसमाय कृत्वा वृत्तना वृत्तया जी
नहि कृत्वा दयुः अः तिमनशयु विथान्यनी अ॥ ५॥ प्रा न द
ममनी नः नयमशीया शी वृत्तयेति विदु नग नावः सरा लम
दिना शी ला क्तिके ना वृत्तये न शी गुरो यमसी वृत्त ॥ ५॥ हा जी
वृत्तभव नृनया प्राभु नः मदु सवृत्तः कृत्वा न कि वृत्तिगुद वसिया शी

का न श वी नावी शी जीमन वी नी वृत्तः सुखगतयु न्यदुरतायु
शी ॥ ५॥ नाजायु यी तथ शी शी वृत्तः मशी शी जी वृत्तय नी
क नदु थायु वृत्तः मशी वृत्त व ना वृत्त वी ना वृत्त वि वृत्त तः ससद
यी नदी वृत्त ना शी ॥ ५॥ शिव कृत्वा मशी शीः सुख भक्त न्य
नी शी सुकृत्वा क क न्य जीमसयु वृत्तः स्या ना वृत्त वी शी जी तद
तं मय कृत्वा क क कृत्वा श्वन वृत्तः कृत्वा कृत्वा नी स वी

द्वनवक्र नो नावी कुनि वी॥२॥५॥ १२५ ता गवरभासः हेमधुरी
ज्ञानया मुसुरि येडन मन थनी दे के कः अवेरस को को स्थान
मरुया फूटः के करसन जीवु नायन ननस जीवा त ही न दे
के कहु मा अ भारतीरी हरन क जी रा कातः १५ के क त मन
जि वि वा वया म गनसु ना नम दु लेः के क अ ग्या ना मी सा या म

न थीरन क म क र्कः १५ के क वरि सा या म य नु र भर वारं नु र
मे जा करे १५ के क यो न व जी स्वे र और न नो वात
के क अरु वलु न वरु रानी मा ता सी भी वर ज जी
ग नी १५ के क का क स्या मन पु ले या न थ क क रा का नी ॥३॥

१ निसी श्री गणेशाय नमोः वी ह्ये न मोः वी ह्यपजर कदि वे ध सर्व न स
२ तु नि कि त न उ ग ते जो म द्वा वी यः सर्व स नृ न र्व न ॥ मि फ र रं मः मा
३ नै म ह्य सा र र ह स त त द हं स प न र व आ पि आ तु मार दा स दा नै वे पा
४ रै र द भं तु गो वी ह्यः ज र ग र म तु ती वि क र्म उ भ र भ्या के स क्रै र
५ अ क भि त्या वै व ज ना द राः ना भो तु अ भ ग दे तु वा म ना त

६ ठा उ द ले प ह ना भ व ह री यी आ य र भ तु ॥ वा स पा स्वे त तो
७ वि ह्य द दि न्ये म व सु द न ॥ वा रु दो वा सु दे व य ह्री द य व ज रा
८ द नैः कं श्री र थो तु वा का स ह्य कं व म ह्य म व ले मा धि ते ग
९ रा यो र भे दि ती के स मु जे ना सि के ॥ नि तो रा रा य न र थो ल ला
१० नै व ग र द धी ज ॥ क यो लो के रा नार भो वै न ते ज धी ज प्र मु ॥

१५ श्री वत्स तस वं गा ते सुर श्री मे पुरुषो तमः पुरुषे तु पंवरिका
१२ श्री आशिमा श्री धरा तथा ॥ इति ने नारसि कं वने वत्ता त्रयामो
१३ दर ॥ पुरुषो तमस्तु वारुणा पितृ त्रास के गदा दूरस्तु के वीर्यं स्वभि
१४ सा त तोडसिः प्रा ता नेरु ग दार श्री आका शे ~~ख~~ ख । सुदं र्पन ॥ =
१५ ससि ठो शर्व गा त्व पु प्र र वीर्यु विर्यु पंज तं । वीर्यु पंजल वीर्यो

१६ क विवरा मे मफि तरे ॥ राज दुरे प थे धरे सं गार मे लस सं कठे =
१७ न दी सुतरां वीर्य वाद्य वीरो भयत था ॥ अग्रि द ग धनी पाते
१८ सुभुत ग्र के विना शी र्ग ॥ वीर्यो निभुत प्रे लु भयं ना स्ति कदाच
१९ न मं ॥ र भार दू मा का दे व ल भो र ओ महे स्वरम । र दो तु स व दे
२० वीर्यो वला विर्यु स वस्माने जरा द नं मज लै र क्षा तु वारा फा थ

११ लेर हेतु वामनंत भाम्भ थं भ्याना रसि कं व सर्व तु पातु के रा वः क
 २२ वं वासु दे व वं ये प थाति सु मत्ये न सः न भ यं रा य रा रि द्र मा सर्व
 २३ व्या धि वि रा स नं ॥ वि द्या थै र भ ते वि द्या ध न्य थै र भ त ब र्ध नं ॥
 २४ क न्या थि र भ ते क न्या मो आ थि ल भ ग ति ॥ अ पु त्रो र भ वे पु त्रो
 २५ तं भा ग्या ल भ म ते ति यं म ॥ का मा थि ल भ ते का मा व ह्नु हो कं सु
 २६ शं कं क्ष ति ॥ अ वृ ता नं द गो वि दं ना म वा रा रा भ य व ज ॥ न स्य

२७ ति स क रा लो गा स त्र स त्र व द्वा म्भ क ॥ आ दि त्या द पि ति वि
 २८ अं तु द द पा नि म हे स्म र पं वै ता रा स मरी नी त्य व्या धि त स्या वि रा
 २९ स न र सा ये नि उ स ध्या न दे वा न्म प र जि त धि र ते दे व रा ज
 ३० का सी रा ज त था स न ॥ आ ते से री ना सा ये व र वो धी का न र्था
 ३१ इ ति श्री स क सं वा ये वि र वी त वी ह्नु प ज ल त्या ल स म प त सु भ

उ न म ॐ श्री कृष्णाय ॥ अरु न ड वा न व ॥ ॥ क न पा म ए व ॥ क न पा म द मि ड न ॥ क न पा य
ह य कृष्ण ॥ क थ क सा ज न ड न ॥ ॥ अरु न न ध य ॥ श मि कृष्ण ॥ क पा य न कान न ड न ॥ कृष्ण
प न कान न ड न ॥ क पा य न स मि ल वा द ॥ ॥ अरु न लो श मि कृष्ण ज न क ड न ड कं धा न ॥

॥ १ ॥ ॐ ए ग वा वा व ॥ म न ग लो ह व ॥ स म प न व व सु द मि ड न ॥ क क म ज ए व क रि
ॐ व लो पा तु न ड न ॥ २ ॥ ॐ क नो स्य ॥ अ ग्या वि न ॥ अ व या कृ वी मा कं जी या या
पा प न कान न ड न ॥ ॥ म व या य न मा व क पा प न कान न ड न ॥ क क म या ड न ॥ अ नि न
अ ड ड ड न ॥ लो वि अरु न ध कं ॐ कृ कृ कृ स्य क ड ॥ २ ॥ अरु ज न वा व क न

पु न न ए न ड ड ॥ क न पु न ग ज वा त्रि कं ॥ क न पु न ल ह न ड डि ॥ क थ क स ज न ड
नं ॥ अरु न न क या क पा पु य न र ॥ अ डि ना ना ना न व ड य अरु जे अरु ड
त न व पे ॥ अरु नि व न को ना मि र वा त्वा ड न ल डो को ना व ड
मा प यो को न्पा कि ते वा त ॥ अ यो को ना र्का कि ते डो को प यो
म व या मा कृ मा ना ह सा ड ल डो या अ मा रे को ल ड वा मा प यो

स्वस्ति श्रीगणेशायनमः॥ ॥ अव्युतं के सवं राम
रा रायनं मूह क्मदामोदरं वासुदेव हृदि श्री धरं
माधवं गोपिका वदन् वं जान कि नायक राम
वंदु म जेत ॥१॥ अव्युतं के सवं सत्प्रभा माधवं
अधरं मावं राधिका राधितं ॥ इन्दिरं वेत सा सुन्द

रं देव कि नन्द नन्द नं सन्दधोः ॥२॥ विह्व वे विह्व वे
संषि ते वक्रि ते रुक् मि नि रा गि ने जान कि जा
नये ॥ वदन् विवदन् वा अव्युत अव्युतात्मने कं
स विदं सि ने वं सि ने तनं म् ॥३॥ क ह्न गो विन्दे ह श
राम नाशने न श्री पते वासुदेव जितं श्री नि धो ॥

अव्युत्तानन्देहे माधवाय्य श्रजद्वारिका नायक
इतिरश्रक ॥४॥ श्रजंगस्थितसितया सोमि
तदराडुकारन्यभुपुन्यसधारिना ॥ लम्पनेनां
त्वितोवानरे सेवितोगरिष्यनापुजितोराद्यवपात
नः ॥५॥ धेनुकारिष्टकातिष्टकसिष्टभतकेसि

हकंसजिवसिकावालकगोपिकागोपकसु
रजाषेलकपुतनाकोपकपातुगोपालक ॥६॥
विद्युद्युद्योतवत्प्रफुरवाससंप्राप्तिरांभोदुव
तप्रेषाक्षसविग्रहम् ॥ रत्नयामालया सोमि
तोहस्ताललेहितं श्रीवयंवारिजाश्रमजे ॥७॥

कुं विवै कंतले वाजमानने मरन्न मैलित्त सत्कुं
राहुलं गंखुयो ॥ हारके पुरनं प्रज्वलत्क कन
किं किं निमंजुलं स्यात्सलं भयेत् ॥ ६ ॥ अबु
तं स्यात्कं यप्रवेत्त्यादिकं प्रोमतत्प्रत्यहं पुषस
हवतत सुन्दर कर्त विस्वभरंत स्यावसो हरि जाय

ते सत्परं म ॥ ६ ॥ इति श्रीमत्संकसवार्धविर
युत अबु ताष्टकं संपुनं म्प्रसुभं म्प्रमम
ये हे ज सो दे त मुवाल को सो मोरारिना म्प्रवसु
ये व सुनो आदाय वस्त्र म्प्रदद्या गतो
पिठुरे य मुना नि कुं ज ॥ १ ॥ हुदा ये त एयति

प्रभुसक्ति द्वाया ऊटिसुनिदिंयो विवित्रादिमा
यामतिवित्तसंलिफेरितुशसंलिअहंकारगा
सिमाहाजाफासि॥१॥ तहिप्रोतइद्वियः येदेह
समातिवमाया ~~मति~~ मतिजलसब्रगातिगरि

फिरिफिरित्रिगुनजालयिअहोतत्पगदिअ
लषेपनिह॥२॥ हजुरकिहूयोक्कदूनताहिह
जमाहूता ~~ह~~ हजुरकिहूयोक्कदूनताहिह
जि कि येकेतमायाहजुमीहूता अतक्केत
मायहजुमीयाहजुरमाखितेजमाकेतक्
तिअधारे॥३॥

माहादेवकि काकाषदेविवाहजानुदु मेपारिजातमो
पारिचित्वाफेरिकाषमाहा अतिसुंदरैलागि जाकं
पियारा ॥४॥ अतिहसलेचायि आइन जसो दालि
इन्काषमाप्रेमपाअधि के प्रयो स्वर्गकैदवितपु
षवृष्टि सदाहुहुं प्रिवानलाग्या गोकुलमा ॥५॥ सलजं

मावुजिपाउवाकहिहुं सरिको विमान्को दिवुजिं
क्योग्याये हिजा तलेवुजिपाउवाकहिं नुसरिको
विमान्को दिवुजिं क्योग्यान् येहि ग्यातलकुठिपा
उकसहजमावहुत्कलदेविपकिलांजिरह्याका ॥६॥

जंघंत राले विमले विसाले अधो मुखो रोमवनेव संतिनाम्
पातु देवि प्रगना मध्ये वंदन्त विनायेक ग्रसति वलि गम् ॥१॥
सिव हरे सैव राम सैव सुमोत्रा विधत्ता पतवार न हरे विमो
श्रज जने स्वरथा दव पाहि माम् सिव हरे विजयं कुरु मे
धवम् ॥१॥ कमललोचन राम दयानि चेह गुनो गज

रश्मि न गोपते सिव तनो भव संकर पाहि माम् मि
पहरे विजयं कुरु मेव धम् ॥१॥ जय जय चिद्वि
ध्वम् भुपते जजया वितपुत्य पयोनि ध्वे जय ह
पामय कृमता मोस्तुते सिव हरे विजयं कुरु मेव
धम् ॥३॥

भवविभोवनमाधवमापतेजलधि सुंदररामरमा
पतेनिगमगुननवगोपतेसिवहरेविजयंकु
रमेवयं॥४॥ फुलेवकवासिजगरिबकसिअ
स्त्रिनपत्तिविपुहस्यमेघः॥१॥ फुलववंपा
नगरिबलंकाअत्रिवसितापुहयेवराम॥१॥

मातारामोमत्पितारामवंदस्वामिरामोमत्सकार
धवेससर्वस्वमिरामवंददयालो नान्यंजानेदेवजा
नेनजाने॥॥॥ विपतिविविधमत्पामुपश्रमासदासवा
क्पदुतायुधिविक्तमससिवाभिरुविव्यसनश्रु
तैप्रकृतिसिधमिदह्यमहतमना॥१॥ दातादलिकुप

निधनाद्रपापिभिरंजि विगद्वन्मायु अकुलिर
जाकुलिवंतदासक लिपुभावकह का लिदास ॥१॥
बंबमुषिनवका कि प्रयवाने नदिज नवा पिता
नतुरावतुरेज हितामन तिवाकपद निसता
नि ॥१॥ व्यामोषामदसानुगतुसिमजु बंलाग्रमपुजितः नि

हं निक्षसनासनहिमि बोनेम ज्वात्तमभिनाहिमी ॥१॥ अ
रेमैजुहंन विवकनिधयाला अगुथिलाः तयो मासाभि
गुतकीचासाकावनिग ॥२॥ लिनायापनिजववैय्या
रिया नापवनक्षनठोठा वनेमभाटया पापिजातम्योपि
पालासकलेवैदाजुकिजानिधातकठवरिति तगठेषोष
षोषान्निवन ॥३॥ चरिचरिवावतगुंलामाससनिजुलो

सकल दोषनेदुर्जिनिमपापिनिस्वस्ति श्री गणेशाय नमः
ॐ अस्य श्री विष्णुपंजरस्तोत्रमंत्रस्तनारदसधिरनुष्टु
पुन्दः श्री विष्णुपरमात्मादेवता अहं विजं सोहं शक्तिः ॐ
ही कीलकं मम देहरक्षणार्थे जपे विनियोगः ॥ नारदस
धये नमः शिरसि ॥ अनुष्टुपं वसे मुखेः श्री विष्णुपरमा

त्मादेवतायै नमः हृदये अहं विजं गुह्ये सोहं शक्तिपादयो ॥
ॐ ही कीलकं पादयो ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ ह्रीं अंगु
ष्टाभ्यं नमः ॐ ह्रीं तर्जनिभ्यां नमः ॐ ह्रीं मध्यामाभ्यं नमः
ॐ ह्रीं अनामिकाभ्यं नमः ॐ ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं करतलकराभ्यां नमः ॐ ह्रीं हृदयाय नमः

ॐ ह्रीं सिर से स्वाहाः ॐ ह्रीं सिखा यौ वैषट् ॐ ह्रीं अस्त्राय क
इति करगं न्यासः अहि विजं प्राणाया मंत्रं यंकु यातः पूर
कः दक्षिणा नाडिकुं भूकः मध्यनाडि रेविका मनाडिः
स प्राणायामं रव्यते हं स अथ ध्यानम् परं परं स्पृष्टुते रना
दि मे कं नि विष्टं बहु गुहा पां सवल्लय सवव रावर स्पं न

मा मि विष्णु जगदेनात्पंम् ॥१॥ विष्णु पंजर माहा दिव्यं
सर्व दुष्ट निवारनाम् उग्र तेजं महा विर्य सर्व सन्नु नि
कंदनम् ॥ त्रिपुरेंद्र ह्य मान स्पृष्टुते रना ॥३॥ पादौ रक्षे
त जे विंदो जं यै वैव त्रि विक्रमः ॥ उरु मे के सवोर रक्षे
त कंठि वैव ज नार्दनः ॥४॥ नाभ्यो वैवा युतो रक्षेत्

उ ह्यंवे वामनस्तस्या उदरे पद्मनाभश्च प्रिये वै वातुमा
धव ॥ ५ ॥ वामपाशे स्थितो विष्णुदक्षिणे मधुसूदनः बहु
भ्यां वासुदेवं च हृदये च दामोदरः ॥ कंठे शेरुवाराहक
स्तस्य मुखमंडले माधवकर्णसूत्रे तु स विकेशावुतासि
के ॥ १ ॥ नेत्रे नारायणश्चेललाटे प्रहृष्टवज्रः ॥ कपोले के

सवोरक्षेकै कंठसर्वतो विशिः ॥ ८ ॥ शीवतो पितु सर्वेषां
मंगानां वैवरश्चतुर्वर्त्त्यापुंदुरिकाक्षप्रस्राग्नेयां माध
वस्तस्या ॥ ९ ॥ दक्षिणे नारसिंहश्च नेत्रसत्याब्जदासो दामो
दरः पुरुषोत्तमो वासुदेवाय वंद्यपितवा स शम् ॥ १० ॥ गदाध
रश्च के वर्यो संघ इशानतो दिशिः आकाशे च गदा रश्मि
पातालेन श्रुदर्शितः ॥ ११ ॥ स न स सर्वगात्रेषु प्रतिष्ठावि

कुपंजरविष्णुपंजरप्रविष्टो हविचारामिमहितं त्वे ॥ १२ ॥

सर्वश्रीगणेशाय नमः

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

292
1215

ॐ नमः श्री गायत्री नलाकि न शुभ नायक वा वि सत्वाय
महासत्वायः महाका रणी काय ॥ ॐ नमो लो
को नाथायः नमनमः देव नमः नुष्टा सुत नीतव
लन प्रनिह नमो ना नु नमनन ॥ लोको सत्वा मा मस
र नमः नकु कपा नी कु र का र नमः ॥ १ ॥ स सा लो

दधिसध्या नि मयः क्रम महा मिता माहि
त क त य ॥ मा म न व धी ल य मा वि र व कं ॥ पा
हि महा क त नो मि न कं ॥ २ ॥ र प्र नि मा
ना प डु त न उः म न न महा भय विरु न ग

तुः ना तय भगवन न मला क म माः याव ही
वि या स्मि न विष मा ॥३॥ कृ त मन्य क्री गहन
म बु स्यः ह त मरु ना प्रा नि सह स्य ॥ ना भ म
मा कृ त पो प म (पु षे) ना अ य संप्र ति का म्य

क दा र्थ ॥४०॥ य क्री वि त स का ल व न
यैः ली को नि यै त नि रु म स र्म ॥ वं ली क
अ न स म य स म रु ॥ वा वि क न ल कं ची त मा
त्य र्म ॥२॥ सु ला ना य क वि वी क म हि त स्र य

मन् मादि त यपि पत्र विहित ॥ तदि ता निस्म
मा म सपापं सु ठयि ना थ कला मविला यं ॥ ७ ॥
द व मनु श्या सु रजा तिसा तिर्य क नल कं प्र ग
ति ना सखा प नि व सु त कि स दा ता ॥ त्रु सा ना

नितित व म वि वा ला ॥ १॥ त न म मा पनी स त्र
का र्थं वि रु स नि रंग त का र्थ ॥ २ ॥ ति ७ ॥
त ग व नू ना तित ना मिः य व न ल कं न व वि श्र
मि ॥ ४ ॥ किं वा पत्य क ला पि प ता थ ॥ मू व मि

एगवत्सामक शार्थः ॥ अथवा पत्त कुपातवयु
न्यः ॥ जनया सिद्धि कथमविपूर्वः ॥ २॥
ननापि रुवसिपनिर्गुणः ॥ रूपयसि कलुखकि
मणिमदद्यात्तमार्थः तगव न्य तहि नदइ ॥ रूप
मा क रमा मिह नकु ॥ १० ॥ द कि तु तग मयुत

क न रैः तस्य मकै थु कव्यसु विची तं ॥ मा
सासि जि तास्य यथ कः तव ता मि त्या ज्ज
॥ ११ ॥ अं जन गुति का पा द् क सि हि ॥ सि होष धी म
कु वि भु द्दी ॥ मि ह्य तु य स्य मी पु त वं ॥ १२ ॥

उयस्यस्त्वेता कथा ॥१२॥ ये कलबलनवि
नाचनहिना ॥ विविधिव्या धी महाएयदिना ॥
तैवयि तुष्कै पृक सति ता ॥ वितर्मेत्यनुजी
गुणगस्तीता ॥१३॥ गद्व्या धिग्रहजकिन्य

१/सक्तियाक्ति सदा या गि न्य ॥ सतति नतस्यप्रा
यमदत्त ॥ पुतायस्य त्वजी नहत्त ॥१४॥ वृत्ताया
कै न्युत्र किंप्रियमानः ॥ मुंवसिंहगदन्मामकताध
१/ताम्यहमनुदिदमुद्यतपात्रि ॥ नासयत्रासम्

मा कुवा मि ॥ १२ ॥ षट् षयन्ती वै वल मवसा ॥
कृत्तवह पापं व्या कुल व वृषा ॥ नि तं यन्म मया
स्मि न स कल ॥ यथ न नि ना रु उ म ता वा कलं ॥
॥ १० ॥ कन्कु रसं पुति म मला कस ॥ पुष ता वि

धं जलिला ह म या धना तु क्का पायि क क्षा र्वेः
स गति ह मे न या स्मि स म म ॥ ११ ॥ मोह न ह्वे ष विना
स न के तु ॥ स्त्रां सं सा न म को दधि ॥ १२ ॥ पुति
क सु ल स्मा प न वा द् ॥ स्त्रं गु तु इति न नि सा क त

गङ्गा ॥ १८ ॥ दुर्जित सुगगानु तत्त्वः स्वं १ स्वं
सता स्वर नोष्ठु वपा ली ॥ १८ ॥ स कलज ग्राननिकु
न दे क ॥ १ पा लित व द्दु द्वि तत्त्वः निजित
इर्जय मा म थ मा ता स्वं प ज म सि त जगत

सुदं दः त गवान अनु प क रु मा सिधु स्वं न
वि वि कृ ता का र्म व द्धु ॥ २० ॥ ली ला वि ज
न क र्म वि रं ग म्भ प त्रि दि त वि ष य का संघ
द वि दि ध्या न स मा हि त वि लु स्वं या व क सा धा न वी

कु' १२१॥ तप तस्य कर्षनापि कलु नावा॥ प्रयथुना
नाभं न कथीति तवान॥ कथमिदं मादमा
तगडुं॥ विषयसमिक्ता कुम्भलं कुवकु॥ ३२॥
सकलत्र नाथं प्रतियाकुक्षः॥ साकि तवना निलगसु

तक्षयनन तकुसिक न्मष वनं॥ तव तापूत
का वा तव नं॥ ३३॥ नाथ मया तव्याम विभ
मा
लाः सल वषय भा वुजा जलधा ना॥ ३४॥ सुलजत
निमीन तदु दे॥ सलति निलकलम नासमा॥

व॥ २५॥ ॐ तीहगवस्म ते न नापि॥ यत्पुन्यं स
 सकलपद। नगदरुं नृत्तं ता श्रुयात् कावनवा ॥ १॥
 जनयदुसुन्दरवि विधीविलासं ॥ २॥ ॐ ता
 श्रीमन् श्री श्री आर्या वकिरं पुनरुक्तं न कस्यच
 ता

प्रोक्तं विपरीतं कला गुपति समाप्त ॥ १ ॥ १॥
 ॐ नमः सर्वदा ॥ ॐ नमः ॥ १००५

॥ १२५॥ ५५७७१॥

ॐ नमः॥ श्रीना नायनमः॥ पथमेना नायन॥ महे रूपश्रुता
ते॥ महे केमाता संखाता॥ पितापुत्रमपि॥ गुरुमानधना॥
ऋतुहातिकापुलिः पातननिधनति॥ संखासुतदानतासंध
लेः लेखनति॥ आदिवेद॥ वैधसातु अथ नकाप्रान॥
नज्जाकन॥ साथवातसवता॥ सनकुतुत॥ पुधतीथि॥ अध

गसि सु र्यमः॥ सधुतलपन गायत्री॥ इतकर्मश
गज्ञगनालायनश्रुताले॥ अपि अर्थदानतासंधात॥ दत्तात
श्रुताले॥ स॥ कवितायवाध॥ धमपापकुरुजाय॥ ता॥
दत्तासतनमः॥ प्लपातननाधनती॥ १॥ द्वातियनाय
न॥ कुमरूपश्रुताते॥ कुमकेमाताते॥ पाताताम

मषि ॥ ७३ ॥ सुसकजातु कुतुमानसलता न पृतीपातननि
धनति ॥ ॥ मधुकेसदा नता संघाले तता धनती ॥ २ ॥
तृतीयनायायनः वा गृह्णातु पशुता ॥ वा गृह्णातु केमाना
कामनाता ॥ पिता कर्ममधु ॥ गुरु वक्तुता जमषि ॥ ३ ॥
दृगमपतापातननी धनती ॥ कृत्यसोस तदा न संघाले तता ध

नति ॥ ३ ॥ वक्तुथनायायनः न तसि बकः ॥ रपशुता
नले ॥ नलसिंदके ॥ माता वक्तुता पिता ॥ हतिधुता
मषि ॥ गुरु रमिता तता ॥ ४ ॥ मरुतापृतीपातननि
धनति ॥ केनन्यकस्य एतदा नता ॥ संघाले तता धनति ॥ ५ ॥
पंचम्यनायायनः वाता न रपशुता तता ॥ वाता न के ॥ माता

॥ अदिती ॥ पिता कस्यप जप्तिः गुरुर्वीरवान्मृषिः कु
उवनथाप्रियातननिधनतिः वज्रदानासंधात्रेते अधनतिः ॥ ५ ॥
॥ ६ ॥ धर्ममेनाशयन ॥ पत्न्या मरुप अडाता ॥ प्रह्लादामकमाता =
अवकाः पिता तमदगीगुरु अगस्तमृषिः कुतुकं कंकितप्रियातन
निधनतिः सहवाह दानासंधात्रेते अधनतिः ॥ ७ ॥ सकम्

नननिधनतिः कंसा ॐ नदान संवा नलुं धनति ॥ ८ ॥
नजामेना नायनः वध रूप अता नः वध के माताः कलना
डाता ॥ पिता गगना ममपि रः अगम मपिः अथ मपुता
निदनाति ॥ गथा नदान उ संवा नलुं धनती ॥ ९ ॥ वसं
ना नायनः के न कि रूप अता नः के न के माताः माता

गिः पीत हति कुत दगम मपिः अ रस द रूपः मपिः कुत लज्ज
पुनपात ननिधनतिः सूर्यत धा ना सु व नपानि मस्त के
द ड म र कुत ॥ अथा नकातः वग वसि मस्त ॥ अमिठ धा
ना ॥ अ नि माद्य मास्यः कुरु पत्र श को दसि ॐ मवान

तविहति अता ता न निद नति ॥ कविगदा वता संघ
लता धननी ॥ १० ॥ वृत्ति संग्रहाय विनवात
दस अता ता न साठसमाफ ॥ ६० ॥ ६० ॥ १००००

ॐ नम हगवता वसुवाय वृत्ता उवाव विष्णु पत्रक
द्वर्वसर्वसंतं । वनिवातन । उवायतामहाविशाः सवसतु
निकितनं ॥ तपुनदतमानेन वृत्तना तु शुभतकित नताकंस
पवका मि ॥ शतमानका सदा भव ॥ पाद नवतुष्टविद जगनपुत

तिविक्रमः उरुत्पन्नस्य नमः॥ कथा वत्तु जनादनेः॥ नाभो तु अरु
विता नये॥ मुक्ते तु वामन तथ॥ उदरस्य नमः॥ इति पितृ
वत्तुः॥ वामनस्य तन्ना विष्णुः॥ दत्तुः नमः॥ सुदने॥ वाहुदर
वासदेवः॥ हिदयवजनादने॥ कथनवत्तु वाताहाः॥ कृष्णव

मर्मदन्त॥ माधवा क्रोधवत्तुः॥ द्विविक्रमस्य जनादने॥ निता नमः
यत्तुः॥ तला तगदुधज॥ कपालं कस्य नमः॥ वनतः जस्य
धनि॥ श्रीवत्तु सवत्तुः॥ नमः॥ दत्तुः नमः॥ दत्तुः नमः॥
श्रीगो नित्यी श्रीधने तथ॥ दत्तुः नमः॥ दत्तुः नमः॥

आ तुदाभाद नः पु न आतम उः वा रु मः वा रु द्योः पातको
सिद्धिः गदाध नः का वै दः संग ग मः ग द सि नि ॥ पात
न पु ग दा न वेः आ का त्या पु स व स नं ॥ सं नि ध स व ग
न व ॥ पु वि ता वि पू पं ग न ॥ वि पू हं ॥ वि व ग मि म हं

न न ग ज हा न प र थ द्या न ॥ स ग ग म स रु सं क न न दि
वु त न न व ॥ द्या द्या न म य न थ ॥ अ गि ता द द्य द द्य
नि या त व ॥ भू त गृ ह वि ना मि नं ॥ दा कि नि रु त प त वू भ
य ना ति क द्यो व न ॥ न व न व मा ला दे ड ॥ न न व न व

महेश्वरं । नृषे तस्य सर्वदेवानां । वृक्षा विष्णु महेश्वर
वं ॥ दिवा वषट् सुजहं । नाष्टि मेघवन्दमा ॥ सद्यथा ज
जनावन ॥ ज न न वषट् वा नाका ॥ फलं त वषट् वा नाका
मननथा ॥ अथ धीना नसिं कव ॥ सद्यपाठ के सडा ॥

॥ कडा वं वा सु ॥ धाता व ॥ जयपथं तिसृतिव न ॥ नम
यन वृत्राय दिष्ट ॥ सद्यवा धि विना सा सा ॥ वी श्रथि न
भक्त ॥ विद्या ॥ धाता न धि न ॥ भक्त धन ॥ के डा धि
लभनं कडा ॥ माका धि न भक्त गति ॥ अष्ट पुत्र नम

नपुं०॥ नमो भगवते नमः नमः नमः॥ कामा॥ विष्णुर्कं सज
कृति॥ अतातानददगुविंद॥ नामवा ननहताप
षज॥ नृस्यमिस्मक गालागम॥ सत सत वधा मिह
आदि नदु नतावीकु॥ वंदयानि महे अतल॥ पं

नतातासमननि॥ सवधि विना सिनि॥ ॥
ॐ नमो भगवते॥ श्रीगुरु नमः नमः नमः॥ २॥
सिमन नमि नविन॥ जी न कया या य धु हु न य म
ऊ यी जी नम ही या सि व न न या द या वी न पा न मु कु न मु



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय